डाक पंजीयन संख्या : बीकानेर/068/2021-23
REG. NO. RAJHIN/2002/14707

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

खेती

18 मार्च 2023 वर्ष : 2 अंक : 3 प्रति अंक मूल्य : 10 रुपये वार्षिक शुल्क : 120 रुपये

कद्दूवर्गीय सब्जियों की वैज्ञानिक खेती किसानो की आय बढानें में एक बेहतरीन उपाय

ममता[1] नारायण राम गुर्जर[2] एवं संतोष यादव[2]

सब्जियों में कद्दूवर्गीय सब्जियों का कुल सबसे बड़ा है, जिसमें फूल मोनोइशियस होते है यानि नर व मादा फूल एक ही पौधे पर अलग–अलग आते हैं। इन सब्जियों की खेती मौसम व बे–मौसम में की जाती है। विभिन्न रूप, रंग, आकार, स्वाद, उपयोग और पौष्टिक गुणों के कारण, ये सभी को आकर्षित करती है। इनकी खेती करना सरल होता है। यही कारण है कि ये सब्जियाँ घर के आंगन के साथ किचन गार्डन, छप्परों, खेतों और नदियों व तालाबों के किनारों से लेकर शहरों तक बहुतायत से उगायी जाती हैं। कद्दूवर्गीय सब्जियों की उपयोगिता भी भारत में अहम स्थान रखती है। आगरा का पेठा पूरे भारत में प्रसिद्ध है। पेठे का कच्चा फल सब्जी के लिए और पक्का फल मिठाई बनाने के लिए उपयोग किया जाता है। लौकी सुपाच्य होती है, यही कारण है कि चिकित्सक रोगियों को इनकी सब्जी खाने की सलाह देते हैं। सूखी खांसी और रक्त संचार के रोगों के लिए टिण्डा अत्यन्त गुणकारी सब्जी है। करेले की सब्जी पेट के कीड़ों को मारने के लिए अच्छी होती है व गठिया रोग में भी लाभकारी होती है। इसके अलावा करेले में बहुत से औषधीय गुण विद्यमान रहते हैं। खीरे को कच्चे, नरम, अपरिपक्व अवस्था में उस समय खाया जाता है जब वे रस से भरे हुए होते हैं तथा सलाद के रूप में काम लिया जाता है।

कद्दूवर्गीय सब्जियो की उन्नत किस्में: अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु यह अति आवश्यक है कि कद्दूवर्गीयसब्जियों की उन्नत किस्में का चुनाव किया जाये। स्थानीय किस्मों की बजाय उन्नत व संकरण किस्में अधिक उत्पादन देती है तथाकीट व रोगों के प्रति प्रतिरोधक भी होती है। कद्दूवर्गीय सब्जियों की उन्नत किस्में व बीज दर इस प्रकार हैं–

क्र.सं.	फसल	बीजदर (किलो में प्रति हे.)	उन्नत किस्में
1	लौकी	4–5	पूसासमर प्रोलिफिक लोंग, पूसामंजरी (संकरगोल) पूसानवीन, आर्काबहार, पूसामेयदूत (संकर लम्बी) पूसासमर, प्रोलिफिक राउण्ड,
2	कद्दू	4–5	पूसा विश्वास, पूसा अलंकार, अर्काचंदन
3	करेला	4–5	अर्काहरित, पूसा दो मौसमी, प्रिया, ग्रीन, लोंग पूसा विशेष, महिको करेला कोयम्बटूर लोंग
4	खीरा	2.0–2.5	बालम खीरा, पाइनसेट, पूसा संयोग (संकर)
5	टिण्डा	4–5	बीकानेरी ग्रीन, दिलपसंद, हिसार–सलेक्शन–1, अर्काटिण्डा, टिण्डा, लुधियाना (एस–48)
6	ककड़ी	2.0	लखनऊ अगेती, अर्काशीतल
7	तरबूज	4.0–4.5	शुगरबेबी, आसाहीयामेंटो, दुर्गापुरा मीठा, दुर्गापुरा केसर, अर्काज्योति व मधु (संकर किस्म)
8	खरबूजा	1.5–2.0	दुर्गापुरा मधु, पंजाब सुनहरी, पंजाब हाईब्रिड, अर्काजीत, हरामधु, पूसा मधुरस, आर एम–43
9	तुरई	4–5	चिकनी–पूसा चिकनी, धारीदार–पूसा नसदार

उर्वरक व खाद: कद्दूवर्गीय सब्जियों की ज्यादातर बेल वाली उपरोक्त सब्जियों में खेत की तैयारी के समय 15 से 20 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद, 80 कि.ग्रा. नत्रजन, 50 कि.ग्रा फॉस्फोरस और 50 कि.ग्रा. पोटाश की आवश्यकता होती है।

[1]विद्यावाचस्पति, सस्य विज्ञान विभाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर
[2]कृषि अधिकारी, कृषि विभाग बाली
[3]विद्यावाचस्पति, मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर

बीज बुवाई: कद्दूवर्गीय सब्जियों हेतु खेत में लगभग 45 सेंटीमीटर चौड़ी और 30 से 40 सेंटीमीटर गहरी नालियां बना लें। एक नाली से दूसरी नाली की दूरी फसल की बेल की बढ़वार के अनुसार 1.5 मीटर से 4.0 मीटर तक रखें। बुवाई से पहले नालियों में पानी लगा दें, जब नाली में नमी की मात्रा बीज बुवाई के लिए उपयुक्त हो जाए तो बुवाई के स्थान पर मिट्टी भुरभुरी करके 0.50 से 1.0 मीटर की दूरी पर बीज बोएं।

बुवाई का समय: कद्दूवर्गीय सब्जियों की बुवाई फरवरी से मार्च में करते हैं और वर्षा के मौसम के लिए जून के अंत से जुलाई माह में करते हैं।

सिंचाई प्रबंधन: कद्दूवर्गीय सब्जियों की फसल का आवश्यकतानुसार समय–समय पर पानी का प्रबंध करें और सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई नालियों में ही करें।

पॉली हाउस विधि: कद्दूवर्गीय सब्जियों की उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में गर्मी के मौसम के लिए अगेती फसल तैयार करने के लिए पॉली हाउस में जनवरी माह में झोंपड़ी के आकार का पॉली हाउस बनाकर पौध तैयार कर लेते हैं। पौधे तैयार करने के लिए 15x10सेंटीमीटर आकार की पॉलीथीन की थैलियों में 1:1:1 मिट्टी, बालू और गोबर की खाद भरकर जल निकास की व्यवस्था हेतु सूएं की सहायता से छेद कर लेते हैं। बाद में इन थैलियों में लगभग 1 सेंटीमीटर की गहराई पर बीज की बुवाई करके बालू की पतली परत बिछा लेते हैं और हजारे की सहायता से पानी लगाते हैं। लगभग 4 सप्ताह में पौधे खेत में लगाने के योग्य हो जाते हैं। जब फरवरी माह में पाला पड़ने का डर समाप्त हो जाये तो पॉलीथीनकी थैली को ब्लेड से काटकर हटाने के बाद पौधे की मिट्टी के साथ खेत में बनी नालियों की मेड पर रोपाई करके पानी लगाते हैं। इस प्रकार लगभग एक से डेढ़ माह बाद अगेती फसल तैयार हो जाती है। जिससे किसान अगेती फसल तैयार करके ज्यादा लाभ कमा सकता है।

पादप हार्मोन्स का प्रयोग करें:कद्दूवर्गीयसब्जियों में नर व मादा फूल एक ही पौधे पर अलग–अलग जगह पर आते हैं। शुरू में जो फूल आते है वो नर फूल होते हैं। घीया, तोरई, ककड़ी इत्यादि कुष्माण्ड कुल की सब्जियों में अधिक मादा फूल आये इसके लिए इथेपोन रसायन की 20–25 पी.पी.एम. का छिड़काव करें।

कद्दूवर्गीयसब्जियों में पौध संरक्षण: कद्दूवर्गीयसब्जियों में लगने वाले कीटों में लाल भृग, फल मक्खी तथा बरूथी मुख्य है। रोगों में तुलासिता, झुलसा, श्याम व्रण तथा छाछ्या मुख्य हैं।

रोग एवं नियंत्रण:

चूर्णिल आसिता (पाउडरी मिल्ड्यू): कद्दूवर्गीय सब्जियों में यह एक प्रकार की फफूंदी से फैलने वाली बीमारी है, जिसका आक्रमण होने पर बेलों, पत्तियों, तथा तनों पर सफेद परते चढ़ जाती हैं। इसकी रोकथाम के लिए कैरोथेन 0.1 प्रतिशत घोल एक ग्राम एक लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करना चाहिए। बाविस्टीन 0.2 प्रतिशत से भी इस बीमारी की रोका जा सकता है। बीमारी की रोकथाम हेतु 10 से 12 दिनों के अन्तराल पर दो छिड़काव करें।

मृदुल आसिता (डाउनी मिल्ड्यू): कद्दूवर्गीय सब्जियों में इस बीमारी के प्रभाव से पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं तथा इसके साथ–साथ पत्तियों पर भूरापन लिए हुए काले रंग की परते चढ़ जाती हैं। यदि गर्मियों के मौसम में बरसात हो जाए तो यह बीमारी बहुत आम हो जाती है। इस बीमारी की रोकथाम के लिए डायथेन एम–45 या रिडोमिल 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

फ्युजेरियम विल्ट: कद्दूवर्गीय सब्जियों में इसकी रोकथाम के लिए कैप्टाफ 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर जड़ों में प्रयोग करें। फसल बदल–बदल कर बोएं, 3 साल का फसल चक्र अपनाएं।

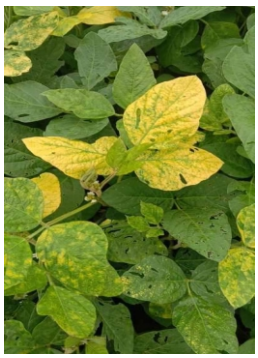

वायरस की बीमारी (मोजैक):यह विषाणु द्वारा होता है और इस रोग का फैलाव रस चूसने वाले कीटों द्वारा होता है। यह रोग बरसात वाली फसल में अधिक पाया जाता है। इस रोग की रोकथाम के लिए रोगग्रस्त पौधों की पहचान कर शीघ्रातिशीघ्र उखाड़कर गड्ढे में दबा देना चाहिए। साफ खेत और खरपतवार नियंत्रण करके वायरस के संवाहक सफेद मक्खी एवं चेपा को नियंत्रण में रखा जा सकता है। इमीडाक्लोरोपीड 0.3 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करके इस बीमारी को रोका जा सकता है।

कीट प्रकोप एवं नियंत्रण:

लाल भृंग–लाल कद्दू भृंग (रैड पम्पकिन बीटल): कद्दूवर्गीय सब्जियों में इस कीट के शिशु और वयस्क दोनों हीफसल को हानि पहुंचाते हैं।वयस्क कीट पौधों के पत्ते में टेढ़े–मेढे छेद करते हैं, जबकि शिशु

पौधों की जड़ों, भूमिगत तने तथा भूमि से सटे फलों और पत्तों को नुकसान पहुंचाते हैं। लाल रंग का यह कीट अंकुरित व नई पत्तियों को खाकर छलनी कर देता है। दिन के समय यह कीट मिट्टी के ढेलों या दरारों में चला जाता है तथा रात्रि के समय पत्तियों को खाकर नुकसान पहुंचाता है।

नियंत्रण के लिए मिथाईल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण का 20 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव करें। या एसीफेट नामक दवा आधा मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव या कार्बोफ्यूरॉन डस्ट 5 प्रतिशत का भुरकाव सुबह के समय करें।

फल मक्खी (फ्रुट फलाई): कद्दूवर्गीय सब्जियों में इस कीट की मक्खी फलों में अंडे देती है और शिशु अंडे से निकलने के तुरंत बाद फल के गूदे को भीतर ही भीतर खाकर सुरंगें बना देते हैं।

नियंत्रण:

- खेत की निड़ाई करके प्यूपा को नष्ट कर दें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों के ग्रसित फलों को भी एकत्रित करके नष्ट कर दें।

- मक्खियों को आकर्षित कर मारने के लिए मीठे जहर, जो मेलाथियॉन 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी एवं 1 प्रतिशत चीनी या गुड़ (25 ग्राम प्रति लीटर पानी से बनाया जा सकता है) को 50 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। फल मक्खी रात को मक्का के पौधों के पत्तों की निचली सतह पर विश्राम करती है। इसलिए कद्दूवर्गीय फसलों के खेत के पास मक्का लगाने और उस पर छिड़काव करने से इस कीट को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों में फल मक्खी के नरों को आकर्षित करने के लिए 'मिथाईल यूजीनोल" पाश का प्रयोग भी किया जा सकता है।

सफेद मक्खी (व्हाइट फलाई): इस कीट के शिशुओं तथा वयस्कों के रस चूसने से पत्ते पीले पड़ जाते हैं। इनके मधुबिन्दु पर काली फफूंद आने से पौधों की भोजन बनाने की क्षमता कम हो जाती है।

नियंत्रण:

- इल्लियों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें।
- नीम बीज अर्क 5 प्रतिशत या बी टी 1 ग्राम प्रति लीटर या कार्बोरिल 50 डब्ल्यू पी, 2 मि.ली. प्रति लीटर या स्पिनोसेड 45 एस सी 1 मि.ली. प्रति 4 लीटर पानी में छिड़काव करें।
- रोकथाम के लिए एमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस एल 1 मि.ली. प्रति 3 लीटर या डाइमेथोएट 30 ई सी 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

चेपा (एफिड):

चेपा लगभग सभी कद्दू वर्गीय फसलों पर आक्रमण करते हैं। ये पौधों के कोमल भागों से रस चूसकर फसल को हानि पहुंचाते हैं।

नियंत्रण:

- कद्दूवर्गीय सब्जियों में लेडी बर्ड भंग का संरक्षण करें।
- इन सब्जियों में नाईट्रोजन खाद का अधिक प्रयोग न करें।
- इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 1 मि.ली. प्रति 3 लीटर या डाइमेथोएट 30 ई.सी. 2 मि.ली. लीटर या क्यूनोलफास 25 ई. सी. 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी का छिड़काव करें।

पत्तीसुरंग कीट (लीफ माइनर): इस कीट के शिशु पत्ती के हरे पदार्थ को खाकर इनमें टेढ़ी–मेढ़ी सफेद सुरंगे बना देते हैं। इससे पौधों का प्रकाशसंश्लेषण कम हो जाता है। पत्तियाँ सूख जाती हैं।

बचाव: ग्रसित पत्तियों को निकाल कर नष्ट कर दें।

रासयनिक नियंत्रण: इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस. एल.100 मि.ली. दवा प्रति हेक्टेयर 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

पैदावार: फसल अनुसार उपज इस प्रकार है, जैसे– खीरा 100 से 120 क्विंटल, लौकी 250 से 420 क्विंटल, करेला 75 से 120 क्विंटल, कद्दू 250 से 500 क्विंटल, तोरई 100 से 130 क्विंटल, चप्पन कद्दू 50 से 60, खरबूजा 150 से 200 क्विंटल और तरबूज 300 से 350 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

दुग्ध ज्वर

डॉ. राजकुमार बेरवाल एवं डॉ मनीष कुमार

यह रोग मुख्यतः अधिक दूध देने वाली गाय भैंसों में कैल्शियम की कमी से होता है यह इन प्राणियो मे ब्याने के 48 से 72 घंटे के अंदर होता है व इसमे प्राणी कमजोर ,लेट जाना , आघात लगना व मृत्यु जैसे महत्वपूर्ण लक्षण प्रदर्शित करता है ! हालांकि इस रोग मे पशु के शरीर का तापमान नही बढ़ता परन्तु फिर भी इसे उपसा मिअमत कहते है यह रोग पशुओं में कैल्शियम की कमी से होता है इसलिए इसे हाइपर्कैल्सीमिया, काविगं पैरालाइसिस भी कहते हैं

कारण :–

गौवंश के रक्त मे कैल्शियम की मात्रा सामान्यतः 9 –11 उह : होती है ! इस रोग के कारण प्राणी शरीर मे आयनित कैल्शियम की कमी होना है जो प्रसव (चंतजनतपजपवद) के बाद खींसदुग्ध उत्पादन मे कैल्शियम के अधिक निष्कासन के कारण होती है ! इस ीलचवबंसबमउपं की स्थिती के कारण शरीर को कैल्शियम की और जरुरत पड़ती है जो पाचन तंत्र मे अवशोषण व अस्थियो के द्वारा पूरी करने की कोशिश की जाती है जिससे पशु कमजोर व बीमार हो जाता है और इस रोग की चपेट में आ जाता है

लक्षण

1. मुख्य रुप से यह बीमारी पशु के ब्याने के 48–72 घन्टे के भीतर होती है
2. पशु सुस्त हो जाता है ,गोबर बंद हो जाता है
3. वह अपनी गर्दन को पेट की तरफ घुमाकर बैठ जाता है
4. रोगी पशु के आफरा आ जाता है !
5. मांसपेशियां ढीली पड़ जाती है तथा पशु खड़ा होने मे असमर्थ हो जाता है
6. नथुना सूख जाता है एवं गुदा का तापमान घटकर 97 से 100 तक रह जाता है !
7. अंतिम अवस्था मे पशु लगभग बेहोश हो जाता है तथा एक तरफ लेटकर चारों टांगे शरीर से दूर कर लेता है !

8. यदि समय पर इलाज नही मिलता है तो पशु मर भी सकता है

निदान

इस रोग की पहचान प्राणी के प्रसव के आस–पास होने तथा यह रोग होने की स्थिती व उसके द्वारा प्रदर्शित लक्षणों के आधार पर की जाती है

उपचार

- रोग ग्रस्त पशु यदि लेटी अवस्था मे हो तो उसे बैठाना चाहिए ,रोगी पशु को कुछ नही पिलाएं
- कैल्शियम की बोतल को नाडी मे लगाने से पहले उसे हल्का गर्म कर ले तथा धीमी गति से चढाये
- जहाँ तक हो पशु को केवल कैल्शियम के बजाय ऐसा द्रव्य I/V दे जिसमे कैल्शियम मैग्नीशियम तथा फॉस्फोरस तीनो हो , जैसे — Mifex, Cimex आदि !
- Inj – Calcium borogluconate
- slow I/v]400&800 ml -of 25% of CBG-
  - half dose I/v & half dose S/c
  - Antihistamine , anti-bloat drugs भी देनी चाहिए !
  - मिनरल मिक्चर पाउडर भी खिलावें – खुराक 30 –50gm.रोज मुँह से !
- इस क` अलावा आवश्यकतानुसार, लक्षणात्मक उपचार भी साथ में देते रहे

बचाव

1. दुधारु पशुओ को कैल्शियम व फास्फोरस युक्त आहार खिलावें !
2. ब्याने के 10 –15 दिन तक पशु का सम्पूर्ण दूध नही दुहना चाहिए ! दूध की कुछ मात्रा गादी मे बनी रहनी चाहिए !
3. ब्याने से पहले vitamin–AD3 एक सप्ताह ब्याने से पहले लगवा लें जैसे – Vetade

महिला सशक्तिकरण के लिए राजस्थान सरकार की योजनायें

मनीषा शर्मा1, डॉ. प्रसन्नलता आर्य2, डॉ. नीना सरीन3

किसी भी समाज के विकास का सीधा सम्बन्ध उस समाज की महिलाओं के विकास से जुड़ा होता है महिलाओं के बिना व्यक्ति, परिवार और समाज के विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती है आज देश के सभी राज्यों में बेटियों के उत्थान एवं विकास के लिए सभी राज्यों की सरकार अनेकों योजनाओं को चला रही है जिसमें लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से शुरू की गई है आज देश की सरकार बेटियों के जन्म से लेकर उनकी उच्च शिक्षा तक का जितना भी खर्च होता है उन सभी का खर्चा भारत देश और राज्य सरकार मिलकर उठा रही है ताकि देश की महिला साक्षरता दर में तेजी से बढ़ोतरी हो राज्य में महिला बेरोजगारी की दर कम हो उसी कार्य को पूर्ण करने के लिए सरकार ने सभी सरकारी योजनाएं लागु की है महिलाओं के विकास के लिए सरकार ने कुछ योजनाओं जैसे बेटी बचाओ, बेटी बढ़ाओ, इंदिरा गांधी मातृत्व सहयोग योजना और प्रधानमंत्री राष्ट्रीय पोषण मिशन योजना आदि की शुरुआत की है आइए इन योजनाओं के बारे में विस्तार से जानते हैं।

महिला सशक्तिकरण के लिए बनाई गई योजनायें निम्न है

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ : बालिकाओं के लिए केन्द्र सरकार की एक योजना है जो पूरे देश में लागू है। इस कार्यक्रम की शुरुआत प्रधानमंत्री ने 22 जनवरी 2015 को पानीपत, हरियाणा में की थी।

उद्देश्य :

- लिंग–पक्षपाती चयनात्मक गर्भपात को रोकना।
- बचपन में बालिकाओं के अस्तित्व को सुरक्षा को सुनिश्चित करना।
- पूरे देश में बालिकाओं की उच्च शिक्षा को सुनिश्चित करना।

यह मुख्य रूप से सामाजिक दृष्टिकोण को बदलने में मदद करने के लिए एक शिक्षा– आधारित योजना है।

इंदिरा गांधी मातृत्व सहयोग योजना

इस योजना की शुरुआत 13 सितम्बर 2018, में शुरू हुई।

उद्देश्य :

गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं को बेहतर स्वास्थ्य और पोषण के लिए नकद प्रोत्साहन राशि प्रदान करना।

इस योजना में आवेदन करने के लिए गर्भवती महिला का आंगनबाड़ी में पजीकरण होना चाहिए और लाभार्थियों को दो किस्तों में 6,000 रुपए बैंक अथवा डाकघर खातों के जरिए दिए जाते हैं। पहली किस्त गर्भावस्था के 7–9 महीनों के दौरान दी जाती है और दूसरी किस्त की रकम कुछ शर्ते पूरी करने के बाद प्रसूति के 6 महीने बाद दी जाती है।

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय पोषण मिशन योजना : इस योजना को प्रधानमंत्री जी ने 18 मार्च 2018 को राजस्थान के झुंझुनू जिले से शुरू किया।

उद्देश्य :

1. देश से कुपोषण जैसी महामारी को समाप्त करना।
2. तीन वर्ष के बच्चों को आंगनबाड़ी के तहत संतुलित भोजन की व्यवस्था करना।
3. गर्भवती महिलाओं को संतुलित भोजन प्रदान कर उन्हें कुपोषण होने से बचाना साथ ही साथ मां

1. छात्रा – विद्यावाचस्पति, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर 2. सहायक आचार्य, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर 3. आचार्य विभागाध्यक्ष, प्रसार शिक्षा एवं संचार प्रबंधन विभाग, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

से होने वाले बच्चे को स्वस्थ बनाना।

4. 6 माह से लेकर 3 वर्ष तक के बच्चों को इससे लाभ दिया जाएगा।
5. कम वजन के बच्चों की संख्या को पहले चरण में 2 प्रतिशत कम करना, साथ ही साथ एनीमिया और खून की कमी से ग्रसित बच्चों व महिलाओं की संख्या में प्रतिवर्ष 3 प्रतिशत कमी लाना।

भारत में बहुसंख्यक महिलाओं पर कुपोषण का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। भारत में हर तीसरी महिला कुपोषित है और हर दूसरी महिला एनीमिक है। एक कमजोर मां लगभग अनिवार्य रूप से कम वजन वाले बच्चे को जन्म देती है इसलिए इस योजना के तहत ऐसे महिलाओं और बच्चों को लाभांवित किया जाएगा।

जननी सुरक्षा योजना :

भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा प्रायोजित योजना है जिसका प्रारम्भ 2005 में किया गया।

उद्देश्य :

- महिलाओं को संस्थागत प्रसव की सुविधा उपलब्ध कराकर मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर में कमी लाना है।
- प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्सा अधिकारी की देखरेख में अनिवार्य रूप से प्रसव की व्यवस्था करना।

इस योजना के अंतर्गत पंजीकृत प्रत्येक लाभार्थी के पास एम.सी.एच. कार्ड के साथ–साथ जननी सुरक्षा योजना कार्ड भी होना जरूरी है। इससे गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य जांच और प्रसव के बाद देखभाल और निगरानी करने में सहायता मिलती है इस योजना में जननी को 1400/– तथा आशा सहयोगियों को 600/– देने का प्रावधान है।

आई एम शक्ति उड़ान योजना :

इस कार्यक्रम की शुरुआत 19 दिसम्बर, 2021 में शुरु हुई राजस्थान की महिला और बाल विकास के द्वारा आरंभ किया गया।

उद्देश्य :

- सभी महिलाओं की स्थिति में सुधार लाना।
- आंगनबाड़ी केन्द्रों पर जिसकी आयु 10 से 45 वर्ष होगी उन्हें प्रतिमाह सेनेटरी नैपकिन निःशुल्क वितरित की जाएगी।

इस योजना के अंतर्गत लाखों महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं सशक्त बनाया जा सकेगा।

मुख्यमंत्री राज श्री योजना

इस योजना की शुरुआत 1 जून 2016 को की गई है।

उद्देश्य :

- राजस्थान राज्य में बालिका जन्म दर को प्रोत्साहित करना।
- कन्या भ्रूण हत्या को रोकना।
- बालिकाओं के प्रति समाज में सकारात्मक सोच विकसित करना।
- बालिकाओं को भविष्य में शिक्षित व आत्म निर्भर बनाना।

इस योजना के तहत राजस्थान सरकार बेटी के जन्म से लेकर कक्षा 12वीं तक की पढ़ाई, स्वास्थ्य व देखभाल के लिए अभिभावक को 50 हजार रुपये तक की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

इस योजना के अंतर्गत यह राशि निम्नलिखित चरणों में दी जाती है –

बेटी के जन्म के समय 2500रुपये, एक वर्ष का टीकाकरण होने पर 2500 रुपये, राजकीय विद्यालय की पहली कक्षा में प्रवेश लेने पर 4000रुपये, राजकीय विद्यालय की कक्षा 6 में प्रवेश लेने पर 5000 रुपये, राजकीय विद्यालय की कक्षा 10 मे प्रवेश लेने पर 11000 रुपये, राजकीय विद्यालय से कक्षा 12 उत्तीर्ण करने पर 25000 रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

अप्रेल माह के कृषि कार्य

डॉ. पी.एस. शेखावत, निदेशक अनुसंधान,
स्वा. के.रा.कृ.वि. बीकानेर

सस्य विज्ञान :

देशी कपास :बुवाई का उपयुक्त समय :देशी कपास की बुवाई का उपयुक्त समय अप्रेल माह है। विलम्ब से की गई बिजाई से फसल की उपज में कमी आती है। नरमा की बिजाई अप्रेल के द्वितीय पखवाड़े से मई के प्रथम पखवाड़े तक पूरी कर लें। **बीज की मात्राः**—देशी कपास 3.750 किलोग्राम तथा नरमा में 4.0 किलोग्राम बीज प्रति बीघा डाले। **खाद एवं उर्वरक** :—देशी कपास तथा नरमा में 2—3 टन खाद प्रति बीघा के हिसाब से बुवाई के लगभग एक माह पहले डालकर जुताई कर मिला देवें। देशी कपास में 15 किलो नत्रजन 5 किलोग्राम फास्फोरस प्रति बीघा काम में ले नत्रजन की आधी मात्रा तथा सम्पूर्ण फास्फोरस बिजाई के समय काम में ले। **उपयुक्त किस्में: देशी कपास** :— आर.जी.—8, आर.जी.—18। **नरमा** :— आर.एस.टी.—9, एफ—846, एफ—505, बीकानेरी नरमा आर.एस. —2013 तथा गंगानगर अगेती है। **बिजाई की विधि** :— देशी कपास की बिजाई कतारों में 60 से.मी. पर तथा पौधे से पौधे की दूरी 20—25 से.मी. रखें। नरमा की बिजाई 67.5 से.मी. पर कतारों में करें। **बीटी कपासः** बीटी कपास की बुवाई का उपयुक्त समय मई माह का प्रथम पखवाड़ा है जिसके लिये अप्रेल माह के अंतिम सप्ताह में खेत तैयार कर लें।

गन्ना :— सिंचाई :— प्रथम सिंचाई बुवाई के 25—30 दिन बाद करें। **जायद मूंगः— सिंचाईः**— बुवाई से 25—30 दिन बाद प्रथम सिंचाई करें। **गेहूँ : सिंचाई** :— लेट डफ स्टेज पर अन्तिम सिंचाई करें।

पौध व्याधि :

गेहूँः अप्रेल माह में गेहूँ पक कर तैयार होने लगते है। इस समय अनावृत कण्डवा रोग का प्रकोप कहीं—कहीं दिखाई पड़ता है जो अस्टीलेगो—नुडा ट्रीटीसाई नामक कवक द्वारा होता है जो आंतरिक बीजोढ़ रोग है। इसके लक्षण बालीयों में दाने की जगह काला चूर्ण के रुप में दिखाई पड़ते है। इस तरह की रोगी बालीयो को तोड़कर खेत से बाहर जला देवें।

कपासः देशी कपास (जड़गलन) बीज उपचार : बुवाई से पूर्व रोग्रस्त खेतों में 6 किग्रा जिंक सल्फेट (व्यापारिक ग्रेड) प्रति बीघा की दर से मिट्टी में मिलावें। बीजों को भिगोने से पूर्व निम्न दवाओं में से किसी एक दवा के घोल में भिगोकर उपचारित करें। (अ)कार्बेन्डाजिम 0.2 या कारबोक्सीन 0.3 प्रतिशत (2 से 3 ग्राम एक लीटर पानी में घोलकर) (ब)ट्राइकोडरमा हारजिनियम या सूडोमोनास फ्लूओरेसेन्स जैव के पाउडर से 10 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें इसके लिए बीजों को सादे पानी में बिना किसी दवाई के भिगोकर निकालने के बाद उपचारित करके बोंये। **भूमि उपचारः** जिन खेतों में रोग का प्रकोप अधिक हो वहां ट्राइकोडर्मा हरजिनियम 2.5 किग्रा नमी युक्त 50 किग्रा सड़ी गली गोबर की खाद में मिलाकर 10—15 दिन तक छाया में गीले कपड़े से ढ़ककर रखे और बाद में रोग ग्रस्त खेत में खेत तैयार करते समय प्रति बीघा की दर से मिट्टी में मिला दें। **अमेरिकन कपास (लीफकर्ल):** जिन खेतों में रोग का प्रकोप अधिक देखने में आता है वहां देशी कपास की बिजाई करें। खेतों की मेड़ों पर सड़क व नहर के किनारे दोनों और पीली बूंटी, कंघी बूंटी, भाग व अन्य खरपतवारों को नश्ट कर दें या जला दें। रोगी रोधी किस्मों का प्रयोग करें। बागों में और इसके आस—पास के खेतों में देशी कपास बोयें।

कीट विज्ञान : गेहूँः— गेहूँ की पिछेती फसल में दीमक का प्रकोप दिखाई देने पर सिंचाई के पानी के साथ क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. 4 लीटर प्रति हैक्टर या इमिडाक्लोप्रिड (17.8 एस.एल.) 500 मिली प्रति हैक्टर की दर से देवें।

चनाः— चने की फलियों (घेघरियों/टाट) में हरी लट का प्रकोप होने पर निम्नलिखित उपाय करें:— 1. व्यस्क पतंगों के नियंत्रण के लिये फेरोमोन ट्रेप (लिंग आकर्शक) खेत में फसल के बीच में लगायें। 2. सूंडियों दिखाई देने पर निबोलियों का अर्क 5 मिली/लीटर या एन.पी.वी. (विशाणु दवा) 450 एल.ई. (लाख तुल्यांक) प्रति हैक्टर छिड़काव करें। 3. सूंडियों का प्रकोप अधिक होने पर प्रोफेनोफास 50 ई.सी. 250 मिली/बीघा या अल्फामेथ्रिन 10 ई.सी. 70 मिली/बीघा या लेम्बडा साई हलोथ्रिन 25 ई.सी. 100 मिली/बीघा के हिसाब से छिड़काव करें। अधिक प्रकोप होने पर इण्डोक्साकार्ब 1 मिली, स्पाइनोसेड 0.33 मिली, एसीफेट (75 एसपी) 2 ग्राम या ईमामैक्टिन बनजोऐट (5 एसजी) 0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

सरसोंः— अप्रैल माह में सरसों की लगभग फसल कट चुकी होती है। अतः खेत में फसल के सभी अवशेषों को इकट्ठा करके जला देना चाहिये जिससे कीड़ों की विभिन्न अवस्थायें नष्ट हो जावें। उसके साथ—साथ गहरी जुताई कर देनी चाहिए।

गन्नाः— फसल की कटाई के पश्चात फसल अवशेषों को इकट्ठा करके जला देना चाहिए जिससे कीटों की शुश्पत अवस्थाओं को समाप्त किया जा सके। गन्ने की फसल को जड़ एवं तना छेदक कीट से बचाने के लिए क्लोरोपाइरिफॉस (10 जी) कण 20 किलो प्रति हैक्टर की दर से गन्ने की बुवाई के 45 दिन बाद पौधों के साथ—साथ तथा 90 दिन बाद पौधों की वर्ल में डालें तथा पौधों के बीच सड़े व सुखे तने दिखाई देने पर उन्हें निकाल देवें।

कपासः— जिन किसानों को आगामी ऋृतु में कपास की फसल लेनी है। उन्हें खेत में गहरी जुताई कर देनी चाहिये जिससे कीटों की निष्क्रिय अवस्थाओं को नश्ट किया जा सके तथा कीट प्रतिरोधी किस्मों का चुनाव भी कर लेना चाहिए।

धानः— धान की फसल के लिए भूमि उपचार हेतू फोरेट 15—20 किग्रा/हैक्टर की दर से प्रयोग करें।

पशुपालन की पढ़ाई कर युवा ने आधुनिक तकनीकी के माध्यम से किया बकरी व्यवसाय

शंकर लाल, सहायक प्राध्यापक, पशुपालन, कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर (राज.)

हनुमानगढ़ जिले के रामगढ गांव के युवा श्री सुरेन्द्र कुमार पुत्र श्री अर्जुन राम खिचड ने राजुवास विश्वविद्यालय बीकानेर से पशुधन सहायक की पढाई करने के बाद आधुनिक तकनीकी के माध्यम से सोजत नस्ल की बकरियों का पालन कर क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाई है, जिसकी वजह से आस–पास के नजदीकी क्षेत्र और हरियाणा, पंजाब से भी किसान यहाँ भ्रमण के लिए आते है तथा सोजत नस्ल के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।

श्री सुरेन्द्र कुमार ने बताया की बकरी पालन हमारा पारिवारिक व्यवसाय रहा है जबकि पहले हम देशी नस्ल की बकरियों का पालन पुराने तरीके से करते थे जिससे कोई अधिक लाभ प्राप्त नहीं होता था उस के बाद मेने पढाई के दौरान अलग अलग कृषि और पशुपालन विश्वविद्यालयों का भ्रमण किया तो पता चला की बकरी पालन के कार्य को आधुनिक तकनीक के माध्यम से किसी अच्छी नस्ल पर कार्य करके अच्छा मुनाफा प्राप्त किया जा सकता है उस के बाद मेने बकरी की प्रसिद्ध सोजत नस्ल का चुनाव कर केवल दो बकरियों को घर पर रख कर पढाई के साथ साथ बकरी पालन शुरू किया और साथ ही इस विषय से सम्बंधित अलग अलग प्रशिक्षण प्राप्त किये जिससे तकनिकी जानकारी का ज्ञान होता गया और धीरे धीरे बकरियों की संख्या भी बढ़ती गई। बकरियों की संख्या घर पर अधिक होने के बाद एक वर्ष पहले अपने खेत में आधुनिक तरीके से फार्म का निर्माण कर बकरियों की संख्या को और अधिक बढाया। वर्तमान समय में हमारे पास बकरियों की संख्या 60 तक हो गई है बकरी पालन व्यवसाय के साथ साथ विदेशी नस्ल की दुम्बा भेड़ें और कड़कनाथ नस्ल की मुर्गियों को भी रखा है ताकि समन्वित तरीके से आय में वृद्धि की जा सके, साथ ही फार्म में सी.सी. टी.वी. कैमरे लगाकर फार्म का आसानी से प्रबंधन किया जा रहा है।

बकरियों की जनसंख्या में राजस्थान देश में प्रथम स्थान पर है वर्तमान समय में देश में बकरियों की कुल 37 पंजीकृत नस्ले है जिन सभी बकरी की नस्लों में राजस्थान की बकरियों का अहम् स्थान है क्योंकि राजस्थान की बकरियां मुख्यतया मांस एवं दूध दोनों उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाली जाती है राजस्थान में बकरियों की सिरोही, सोजत, मारवाड़ी, झखराना, बीटल, गुजरी, और करोली आदि प्रमुख नस्ले है, परन्तु राजस्थान के पाली जिले की सोजत नस्ल की बकरी ने वर्तमान समय में पुरे भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपनी पहचान बनाई हैं। सोजत नस्ल की बकरी का हाल ही में भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद के राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो करनाल हरियाणा के द्वारा पंजीयन हुआ है जिसकी वजह से बकरी की इस नस्ल की बाजार में मांग बढ़ी है जिससे इस नस्ल को पालने वाले सभी किसानों को और अधिक लाभ मिलेगा।

सोजत नस्ल की प्रमुख विशेषताएं :–मूलतः यह नस्ल राजस्थान के पाली जिले की सोजत तहसील की है बकरी की यह नस्ल अपनी सुन्दरता के साथ साथ दूध एवं मांस उत्पादन की दृष्टि से भी अच्छी है और सामान्यतया एक ब्यांत में दो बच्चे देने वाली नस्ल है जबकि हमारे फार्म पर दो बकरियों ने तीन–तीन बच्चे भी दिए है एवं यह बकरी 16 से 18 महीने में दो बार बच्चे दे देती है इस नस्ल की प्रमुख विशेषता यह है की बकरी का रंग सफ़ेद और इस की त्वचा गुलाबी रंग की होती है जिस से इस नस्ल की सुन्दरता और अधिक बढ़ जाती है एवं साथ ही इस का शरीर बड़ा एवं शरीर का बजन भी अधिक होता हैं जिस वजह से इस नस्ल की बकरियाँ एवं बकरे आसानी से 20–30 हज़ार तक की क़ीमत में बाज़ार में आसानी से बिक जाते हैं।

रख रखाव एवं प्रबंधन :– सामान्यतया बकरी की इस नस्ल को घरेलु स्तर पर या कृषि के साथ साथ खेत में ही एक कच्चा या पक्का आवास बनाकर आसानी से रखा जा सकता है ये बकरियां किसी भी मौसम में आसानी से स्थापित हो जाती है एवं इनमें यदि समय समय पर टीकाकरण और डीवोर्मींग करवाया जाता है तो बकरियों को सभी प्रकार के रोग और बीमारियों से बचाया जा सकता है।

Printed and published by Prof. Subhash Chandra on behalf of Nidesak Prasar Shiksha and Printed at M/s Kishan Enterprises, Magaram Colony, Outside Jassusar Gate, Bikaner and published at Swami Keshwanand Rajasthan Agricultural University, Bikaner, Editor : Prof. Rajesh Kumar Verma.